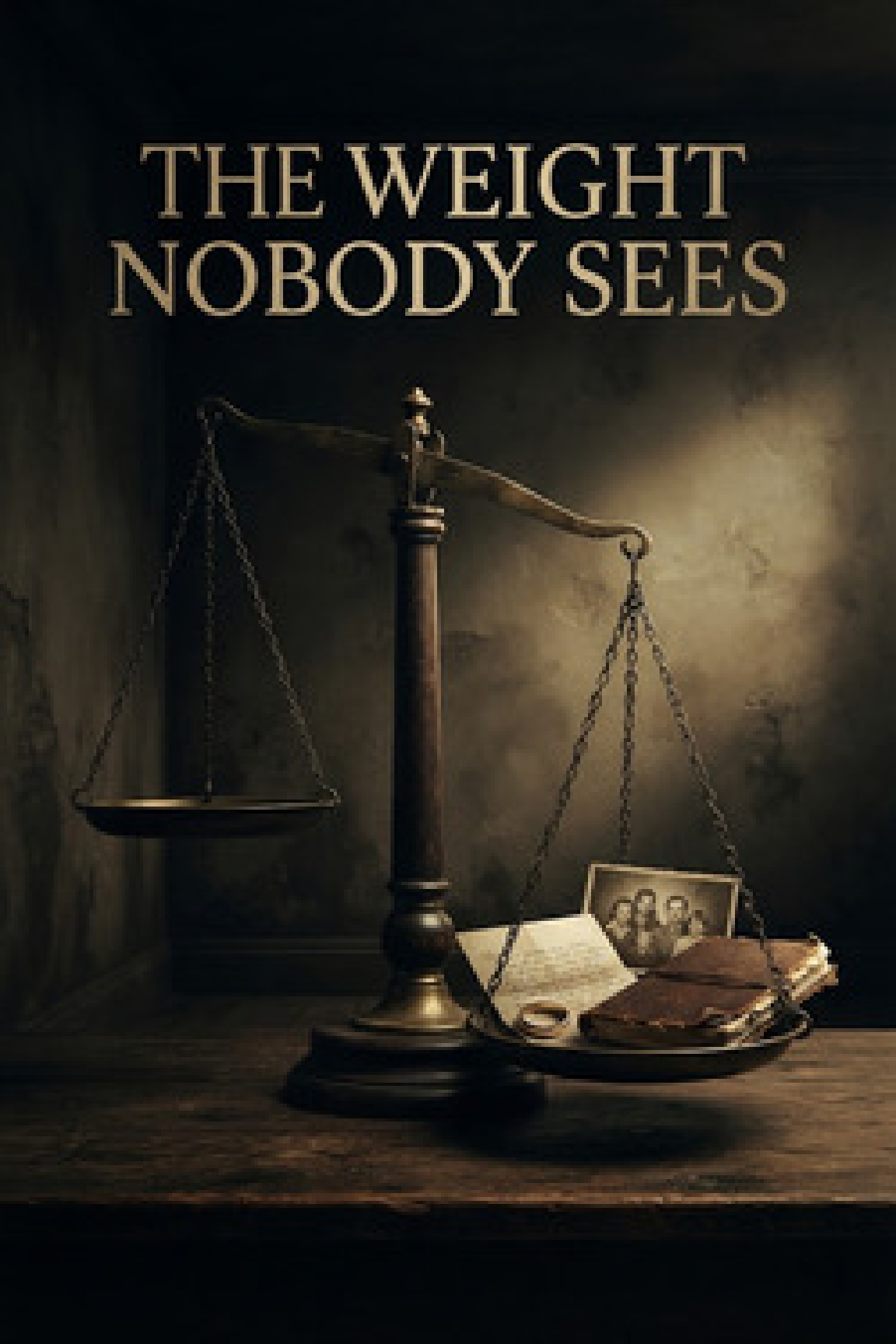
THE WEIGHT NOBODY SEES



दहलीज़ 9
वह बोझ जिसे कोई नहीं देखता

जब हम युवा होते हैं, कर्तव्य हमें एक कठोर शब्द जैसा लगता है।

इसमें नियमों की ध्वनि है।

त्यागों की।

बाध्यताओं की।

इसमें साहसिकता का आकर्षण नहीं है।

इसमें सफलता का रंग नहीं है।

इसमें ख़ुशी की भाषा तक नहीं है।

इसीलिए लगभग कोई कर्तव्य का सपना नहीं देखता।

लोग परिणामों का सपना देखते हैं।

लक्ष्यों का।

विजयों का।

पहचान का।

कर्तव्य बाद में आता है।

चुपचाप।

और यह बाक़ी सबसे अधिक समय तक टिकता है।

कई सालों तक मैंने भी माना कि जीवन का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा वह है जो दिखाई देता है।

पदोन्नतियाँ।

बदलाव।

महत्वपूर्ण फ़ैसले।

जीतें।

फिर समय ने मुझे कुछ ऐसा सिखाया जिसे कोई पुस्तिका समझा नहीं सकती थी।

किसी व्यक्ति का जीवन असाधारण दिनों में नहीं नापा जाता।

वह सामान्य दिनों में नापा जाता है।

उन दिनों में जब कोई नहीं देखता।

उन दिनों में जब बस वही करना होता है जो किया जाना चाहिए।

तब भी जब हमारा मन न हो।

तब भी जब हम थके हों।

तब भी जब लगे कि दुनिया को इसका पता ही नहीं चलता।

कर्तव्य वहीं जीता है।

वह निरंतरता में बसता है।

उत्साह में नहीं।

मुझे कई ऐसे क्षण याद हैं जिनमें इच्छा और कर्तव्य विपरीत दिशाओं में चलते थे।

ये ऐसे हालात हैं जिन्हें सब जानते हैं।

तुम रुकना चाहोगे।

पर तुम्हें जारी रखना होगा।

तुम दूर जाना चाहोगे।

पर कोई तुम पर भरोसा करता है।

तुम अपने बारे में सोचना चाहोगे।

पर ज़िम्मेदारी कहीं और से पुकारती है।

उन क्षणों में जीवन एक सरल और निर्मम सवाल रखता है।

तुम कौन हो जब कोई तुम्हें सही काम करने के लिए मजबूर नहीं करता?

जवाब शब्दों से नहीं आता।

वह कर्मों से आता है।

मैंने जल्दी सीख लिया कि कर्तव्य की एक क़ीमत होती है।

अधिकांश लोग जितनी कल्पना करते हैं, उससे कहीं ऊँची।

इसकी क़ीमत है समय।

इसकी क़ीमत है ऊर्जा।

इसकी क़ीमत हैं अवसर।

कभी-कभी इसकी क़ीमत हमारे सपनों का एक हिस्सा भी होती है।

क्योंकि किसी चीज़ के पक्ष में किया गया हर चुनाव अनिवार्य रूप से किसी और चीज़ का त्याग माँगता है।

क़ीमत के बिना कोई जीवन नहीं होता।

बस ऐसे लोग होते हैं जो चुनते हैं कि कौन-सी क़ीमत चुकानी है।

मैंने पुरुषों को करियर के लिए परिवार का बलिदान करते देखा है।

और दूसरों को परिवार के लिए करियर का बलिदान करते।

मैंने ऐसे लोग देखे हैं जिन्होंने स्वतंत्रता के नाम पर सुरक्षा त्याग दी।

और दूसरे जिन्होंने सुरक्षा के नाम पर स्वतंत्रता त्याग दी।

जीवन मुफ़्त इनाम नहीं बाँटता।

वह हमेशा किसी चीज़ को किसी और चीज़ से बदलता है।

यह चेतना दुनिया को देखने का तरीक़ा बदल देती है।

ख़ास तौर पर जब हम दूसरों को आँकना बंद कर देते हैं।

क्योंकि हर चुनाव के पीछे एक अदृश्य लड़ाई होती है जिसे दूसरे नहीं देखते।

हर ज़िम्मेदारी के पीछे एक निजी क़ीमत होती है।

हर दिखने वाली सफलता के पीछे अक्सर ऐसे त्याग होते हैं जिनका किसी को पता नहीं होता।

सालों के बीतने के साथ मैंने उनका कम आदर करना शुरू किया जो अपने बलिदानों की बात करते थे और उनका कहीं अधिक जो उन्हें चुपचाप जीते थे।

सचमुच ज़िम्मेदार लोग अपने बारे में बताना पसंद नहीं करते।

वे उसे खड़ा रखने में बहुत व्यस्त होते हैं जो उन पर निर्भर करता है।

एक परिवार।

एक संगठन।

एक समुदाय।

एक परियोजना।

एक वादा।

ऐसे लोग होते हैं जो बिना माँगे स्तंभ बन जाते हैं।

एक दिन वे मुड़ते हैं और पाते हैं कि दूसरे उन पर टिके हुए हैं।

संतान।

माता-पिता।

सहयोगी।

दोस्त।

नाज़ुक लोग।

भटके हुए लोग।

स्थिरता खोजते लोग।

उस बिंदु पर कर्तव्य कोरा सिद्धांत नहीं रह जाता।

वह एक रोज़मर्रा की उपस्थिति बन जाता है।

एक ऐसी उपस्थिति जो हमेशा सुविधाजनक नहीं होती।

पर जो चीज़ों को अर्थ देती है।

मुझे एक सबक़ याद है जिसे समझने में मुझे साल लग गए।

कर्तव्य आज्ञाकारिता से जन्म नहीं लेता।

वह प्रेम से जन्म लेता है।

यह फ़र्क़ सब कुछ बदल देता है।

जब तुम किसी चीज़ से प्रेम करते हो, तुम उसकी देखभाल करते हो।

जब तुम उसकी देखभाल करते हो, तुम ज़िम्मेदार बन जाते हो।

जब तुम ज़िम्मेदार बनते हो, तुम एक बोझ स्वीकार करते हो।

और वह बोझ, धीरे-धीरे, तुम्हारा हिस्सा बन जाता है।

इसीलिए जीवन के सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य थोपे नहीं जा सकते।

वे केवल स्वीकार किए जा सकते हैं।

कोई क़ानून तुम्हें प्रेम करने के लिए मजबूर नहीं कर सकता।

कोई नियम तुम्हें उपस्थित होने के लिए मजबूर नहीं कर सकता।

कोई सत्ता तुम्हें तब टिके रहने के लिए मजबूर नहीं कर सकती जब चले जाना अधिक आसान होता।

ये भीतरी फ़ैसले हैं।

और ये बाहर से थोपी गई किसी भी चीज़ से अधिक मूल्यवान हैं।

कई बार मैंने ख़ुद से पूछा कि क्या कर्तव्य हमें ख़ुश करता है।

आज मुझे लगता है कि सवाल ही ग़लत है।

कर्तव्य हमें ख़ुश करने के लिए नहीं रचा गया।

वह हमें भरोसेमंद बनाने के लिए रचा गया।

ख़ुशी आती-जाती रहती है।

विश्वसनीयता टिकी रहती है।

और यही वह है जो लोगों को हम पर भरोसा करने देता है।

आख़िर में, हम जीवन में जो बनाते हैं वह काफ़ी हद तक इसी भरोसे पर निर्भर करता है।

कोई परिवार भरोसे के बिना नहीं टिकता।

कोई दोस्ती भरोसे के बिना नहीं टिकती।

कोई संगठन भरोसे के बिना नहीं बढ़ता।

कोई रिश्ता भरोसे के बिना नहीं बचता।

और भरोसा लगभग हमेशा उसी सवाल से जन्म लेता है।

“क्या यह व्यक्ति तब मौजूद होगा जब ज़रूरत होगी?”

तब नहीं जब सुविधाजनक होगा।

तब नहीं जब आसान होगा।

जब ज़रूरत होगी।

समय के साथ मैंने समझा कि किसी पुरुष या स्त्री का असली मूल्य ख़ास तौर पर वहीं उभरता है।

उस सवाल के जवाब में।

सफलताओं में नहीं।

भाषणों में नहीं।

इरादों में नहीं।

उपस्थिति में।

विश्वसनीयता में।

निरंतरता में।

उन लोगों के शांत साहस में जो वहाँ बने रहते हैं।

सबसे बुरे दिनों में भी।

कर्तव्य की क़ीमत कितनी है?

बहुत ज़्यादा।

कभी-कभी जितना हम चाहें उससे अधिक।

पर इसकी क़ीमत छोड़ देने की क़ीमत से असीम रूप से कम है।

क्योंकि स्वीकार की गई ज़िम्मेदारियों की क़ीमत ऊँची है।

पर जिन ज़िम्मेदारियों से विश्वासघात किया गया, उनकी क़ीमत और भी ऊँची है।

और जब समय बीतता है, जैसा देर-सवेर सबके साथ होता है, तो हमें वे सुविधाएँ याद नहीं रहतीं जिनकी हमने रक्षा की।

हमें वे लोग याद रहते हैं जिनकी हमने रक्षा की।

वे वादे जो हमने निभाए।

वे बोझ जिन्हें उठाने का हमने चुनाव किया।

और हम पाते हैं कि ठीक वहीं, उस जगह जहाँ केवल बलिदान होता प्रतीत होता था, हमारे जीवन का सबसे गहरा अर्थ छिपा था।